Journal of Research in Education - ISSN (P) : 2347-5676
ISSN (O) : 2582-2357

अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में छात्रों का हिंदी के प्रति मनोवृत्ति

निक्की

सार

मन के भावों को अभिव्यक्त करने का सबसे अच्छा साधन भाषा है। इसके अभाव में मनुष्य पशु के समान ही अपना जीवन व्यतीत करता है। किसी भी विषय का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्राथमिक स्तर पर बालकों को भाषा का ज्ञान दिया जाता है ताकि वे अपने विचारो को अभिव्यक्त कर सकें। भाषा ही वह साधन है जिसके माध्यम से प्रत्येक प्राणी अपने विचारों को दूसरों पर अभिव्यक्त करता है। हिन्दी संवैधानिक रूप से भारत की प्रथम राजभाषा और भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। चीनी के बाद यह विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा भी है। 14 सितम्बर 1949 को भारतीय संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में लिखी गई हिंदी भाषा को अखण्ड भारत की प्रशासनिक भाषा के ओहदे से नवाजा था। हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है, लेकिन आज देश की यही राष्ट्रभाषा स्वयं अपने अस्तित्व की तलाश कर रही है। अंग्रेजी के प्रचार प्रसार ने मानो हिंदी से उसका अधिकार छीन लिया है, हिंदी में बोलना अपने स्टेटस को कम करने जैसा है।

इस अध्ययन का उद्देश्य अंग्रेजी माध्यम विद्यालय के छात्रों का हिंदी के प्रति मनोवृत्ति पता लगाना है। इस अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है, जिसमे सम्बन्धित अध्ययन के लिए पटना के छः अंग्रेजी माध्यम स्कूलों के 153 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है। आंकड़ों के संग्रह

हेतु दो चरों का प्रयोग किया गया है। छात्र–छात्राओं के हिंदी के प्रति मनोवृत्ति को मापने के लिए स्वनिर्मित उपकरण का उपयोग किया गया है। इससे सम्बन्धित सभी परिकल्पनाओं का सांख्यिकी परीक्षण किया गया।

मूल शब्द– भाषा, अस्तित्व, स्टेट्स, संवैधानिक, मनोवृत्ति, विद्यालय।

प्रस्तावना

हिन्दी संवैधानिक रूप से भारत की प्रथम राजभाषा और भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। चीनी के बाद यह विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा भी है। हिन्दी और इसकी बोलियाँ उत्तर एवं मध्य भारत के विविध राज्यों में बोली जाती हैं। भारत और अन्य देशों में भी लोग हिन्दी बोलते, पढ़ते और लिखते है।

फ़िजी, मॉरिशस, गयाना, सूरीनामा की और नेपाल की जनता भी हिन्दी बोलती हैं। 2001 की भारतीय जनगणना में भारत में 42.2 करोड़ (422,048,642) लोगों ने हिंदी को अपनी मूल भाषा बताया। भारत के बाहर, हिन्दी बोलने वाले संयुक्त राज्य अमेरिका में 648,983; मॉरीशस में, 685,170; दक्षिण–अफ्रीका में, 890,292; यमन में 232, 760; युगांडा में 147,000; सिंगापुर मं 5,000; नेपाल में 8 लाख; न्यूजीलैंड में 20,000; जर्मनी में 30,000 हैं।

इसके अलावा भारत, पाकिस्तान और अन्य देशों में 14.1 करोड़ (141,000,000) लोगों द्वारा बोली जाने वाली उर्दू, मौखिक रूप से हिंदी के काफी सामान हैं। लोगों का एक विशाल बहुमत हिंदी और उर्दू दोनों को ही समझता है। भारत में हिंदी, विभिन्न भारतीय राज्यों की 14 आधिकारिक भाषाओं और क्षेत्र की बोलियों का उपयोग करने वाले लगभग 1 अरब लोगों में से अधिकांश की दूसरी भाषा है।

14 सितम्बर 1949 को भारतीय संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में लिखी गई हिंदी भाषा को अखण्ड भारत की प्रशासनिक भाषा के ओहदे से नवाजा था। हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है, लेकिन आज देश की यही राष्ट्रभाषा स्वयं अपने अस्तित्व की तलाश कर रही हैं। अंग्रेजी के प्रचार प्रसार ने मानो हिंदी से उसका अधिकार छीन लिया हैं, हिंदी में बोलना अपने स्टेटस को कम करने जैसा है और खास कर अंग्रेजी माध्यम वाले स्कूल के छात्रों के लिए।

हमे उस समय बहुत तकलीफ होती हैं जब एक भारतीय दूसरे भारतीय को अंग्रेजी न आने की वजह से हीन दृष्टि से देखते हैं जबकि ''मनुष्य के मानसिक विकास के लिए मातृभाषा उसी प्रकार आवश्यक है जिस प्रकार से बालक के शारीरिक विकास के लिए माता का दूध।''

हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में कैसे प्रतिष्ठित किया जाये इस पर अब सभी हिंदी प्रेमियों को गहन चिन्तन करना ही होगा, ताकि हिंदी को खोया हुआ अस्तित्व वापस लौटाया जा सके।

हिंदी सिर्फ मातृभाषा ही नही बल्कि राष्ट्रभाषा, राजभाषा तथा अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में प्रतिस्थापित है। यह भाषा सम्प्रेषण एवं विचार विनिमय एवं आत्म प्रकाशन का अनुपम साधन है। बालक के व्यक्तिगत, सामाजिक, बौद्धिक तथा रागात्मक विकास में अनुपम योगदान है। जब तक बालक अपने आप को अभिव्यक्त नहीं कर पायेगा, वह किसी भी विषय को दूसरी भाषा में अभिव्यक्त नहीं कर पायेगा। इसलिए चाहे वह हिंदी माध्यम स्कूल हो या अंग्रेजी माध्यम स्कूल हिंदी विषय को नकारा नहीं जायेगा।

उद्देश्य

1. लिंग के आधार पर अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यालयों में छात्रों का हिंदी विषय के प्रति मनोवृत्ति में अंतर का पता लगाना।
2. बोर्ड के आधार पर अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यालयों में छात्र–छात्राओं का हिंदी के प्रति मनोवृत्ति में अंतर का पता लगाना ।
3. विद्यालय के प्रकार के आधार पर अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यालयों में छात्र–छात्राओं का हिंदी के प्रति मनोवृत्ति में अन्तर का पता लगाना।

नल परिकल्पनायें

1. लिंग के आधार पर अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यालयों में छात्रों का हिंदी विषय के प्रति मनोवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. बोर्ड के आधार पर अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यालयों में छात्र–छात्राओं का हिंदी के प्रति मनोवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. विद्यालय के प्रकार के आधार पर अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यालयों में छात्र–छात्राओं का हिंदी के प्रति मनोवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा

गी॰. विनोद, (2012) :– ''कक्षा ग्यारह स्तर के अधिगृहीताओं की वैयक्तिक भिन्नताओं के सम्बन्ध में गणित विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर कम्पूटर आधारित ट्यूटोरियल सॉफ्टवेयर अनुदेशन के प्रभाव तथा उसके प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन'' इस अध्ययन में पाया कि कक्षा ग्यारह स्तर के

अधिगृहीताओं की वैयक्तिक भिन्नताओं के सम्बन्ध में गणित विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर कम्प्यूटर आधारित टयूटोरियल सॉफ्टवेयर अनुदेशन के प्रभाव तथा उसके प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। यह शोध कार्य पीएच॰ डी॰ की उपाधि के लिए महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय बीकानेर से किया गया। के॰ बुद्धिमान (2012) :– ''पश्चिम ओडिशा संभाग में केंद्रीय विद्यालयों में माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति के छात्रों की संस्कृत भाषा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन'' पश्चिम ओडिशा संभाग में केंद्रीय विद्यालयों में माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति के छात्रों की संस्कृत भाषा के प्रति अभिवृत्ति के अध्ययन में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। एस॰. संजीव, (2012) :– ''राजस्थान और पंजाब बी॰ एड॰ स्तर के अध्ययन में कार्य संतुष्टि, सृजनशीलता और अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन '' बी॰ एड॰ स्तर के अध्ययन में कार्य संतुष्टि, सृजनशीलता और अभिवृत्ति के मध्य महत्वपूर्ण अंतर पाया जाता है।

शोध विधि

शोधकत्री ने इस कार्य के लिए अंग्रेजी माध्यम विद्यालय के नवम वर्ग के छात्रों का हिंदी के प्रति मनोवृत्ति की वर्तमान स्थिति का पता लगाने के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

अध्ययन का क्षेत्र

प्रस्तुत शोध पटना (बिहार) में प्रायोजित किया गया है। प्रस्तुत शोध में समष्टि के रूप में पटना के अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में नवम वर्ग के विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

जनसंख्या या समष्टि

इस अध्ययन में पटना के अंग्रेजी माध्यम विद्यालय के नवीं कक्षा के सभी छात्र–छात्राओं को शामिल किया गया है।

प्रतिदर्श

प्रतिदर्श के अंतर्गत अंग्रेजी माध्यम के छः विद्यालयों को शामिल किया गया है–

1. संत माइकल हाई स्कूल, दीघा घाट, पटना
2. सरस्वती एकेडमी, पटना
3. संत पॉल हाई स्कूल, दीघा घाट, पटना
4. क्राइस चर्च, पटना
5. संत जेवियर्स हाई स्कूल गाँधी मैदान, पटना
6. ग्रेसलैंड एकेडमी, पटना

दत्त विश्लेषण

नल–परिकल्पनाओं का परीक्षण

नल परिकल्पना–1

लिंग के आधार पर अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यालयों में छात्रों का हिंदी विषय के प्रति मनोवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका – 1

लिंग के आधार पर अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यालयों में छात्रों का हिंदी विषय के प्रति मनोवृत्ति का टी–मूल्य

लिंग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी॰ मूल्य–	अभियुक्ति
छात्र	97	113.67	11.98	*0.52	सार्थक नहीं
छात्रा	56	114.5	10.37		

(*0.05 सार्थकता स्तर पर तालिका टी मान 1.98 है।)

उपर्युक्त तालिका को देखने से स्पष्ट होता है कि शोधकत्री द्वारा प्राप्त मान 0.52 है जो मान्यकृत तालिका टी मान (1.98) से कम है। अतः नल परिकल्पना स्वीकृत की जाती है अर्थात् लिंग के आधार पर अंग्रेजी माध्यम विद्यालय के विद्यार्थियों का हिंदी के प्रति मनोवृत्ति में काई सार्थक अंतर नही है। इस तथ्य को आरेख संख्या 1 में दर्शाया गया है।

आरेख संख्या 1

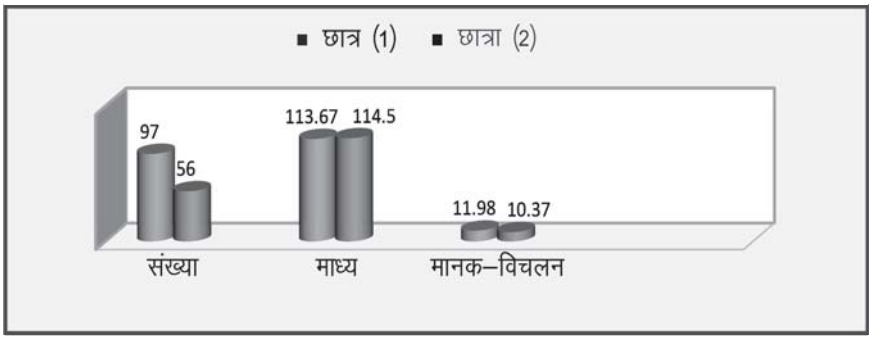

आरेख संख्या 1 लिंग के आधार पर अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यार्थियों में छात्रों का हिंदी विषय के प्रति मनोवृत्ति का ग्राफीय प्रदर्शन

नल–परिकल्पना – 2

बोर्ड के आधार पर अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यालयों में छात्र – छात्राओं का हिंदी के प्रति मनोवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका – 2
बोर्ड के आधार पर अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यालयों में छात्रों का हिंदी विषय के प्रति मनोवृत्ति का टी–मूल्य

लिंग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी मूल्य–	अभियुक्ति
CBSE	104	115.54	11.13	*2.63	सार्थक
ICSE	49	110.74	11.33		

(*0.05 सार्थकता स्तर के आधार पर 'टी' मूल्य का मान 1.98 है।)

तालिका–2 को देखने से स्पष्ट होता है कि शोधकत्री द्वारा प्राप्त टी–मूल्य 2.63 है जो मान्यकृत तालिका टी मान (1.98) से अधिक है। अतः नल परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। अर्थात बोर्ड के आधार पर अंग्रेजी माध्यम विद्यालय के विद्यार्थियों का हिंदी के प्रति मनोवृत्ति में कोई सार्थक अंतर है। इस तथ्य को आरेख संख्या 2 में दर्शाया गया है।

आरेख संख्या 2

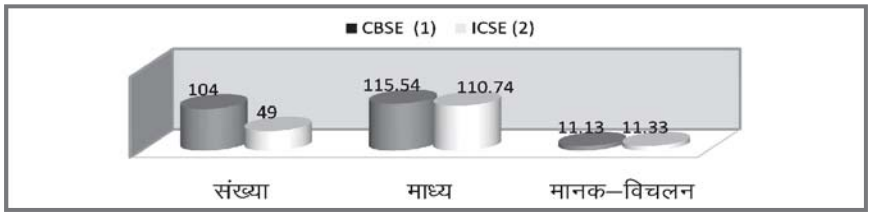

आरेख संख्या – 2 बोर्ड के आधार पर अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यालयों में छात्रों का हिंदी विषय के प्रति मनोवृत्ति का ग्राफीय प्रदर्शन

नल परिकल्पना –3

स्कूल के प्रकार के आधार पर अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यालयों में छात्र–छात्राओं का हिंदी के प्रति मनोवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका – 3
स्कूल के प्रकार के आधार पर अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यालयों में छात्रों का हिंदी विषय के प्रति मनोवृत्ति का टी–मूल्य

स्कूल के प्रकार	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी मूल्य–	अभियुक्ति
मिशनरी	102	114.32	11.02	0.5	सार्थक नहीं
नन–मिशनरी	51	113.27	12.18		

(0.05 सार्थकता स्तर के आधार पर 'टी' मूल्य का मान 1.98 है।)

तालिका 3 को देखने से स्पष्ट होता है कि शोधकत्री द्वारा प्राप्त मान 0.5 है जो मान्यकृत तालिका टी मान (1.98) से कम है। अतः नल परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अर्थात स्कूल के प्रकार के आधार पर अंग्रेजी माध्यम विद्यालय के विद्यार्थियों का हिंदी के प्रति मनोवृत्ति में काई सार्थक अंतर नहीं है। इस तथ्य को आरेख संख्या 3 में दर्शाया गया है।

आरेख संख्या–3

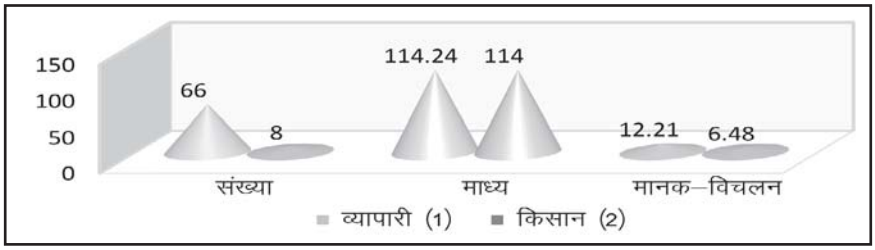

आरेख संख्या –3 स्कूल के प्रकार के आधार पर अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यालयों में छात्रों का हिंदी विषय के प्रति मनोवृत्ति का ग्राफीय प्रदर्शन

परिणामः

इस अध्ययन के निम्न परिणाम प्राप्त हुए है–

i) मिशनरी स्कूल में पढ़ने वाले 14.70% छात्रों का हिंदी के प्रति मनोवृत्ति उच्च, 65.60% का औसत एवं 19.60% का निम्न है, वहीं नन मिशनरी स्कूल में पढ़ने वाले छात्रों का हिंदी के प्रति मनोवृत्ति 15.60% का उच्च, 72.54% का औसत एवं 11.76% का निम्न है।

ii) CBSE बोर्ड में पढ़ने वाले छात्रों का हिंदी के प्रति मनोवृत्ति 18.26% का उच्च, 62.5% का औसत एवं 19.23% का निम्न है, वहीं ICSE बोर्ड में पढ़ने वाले छात्रों का हिंदी के प्रति मनोवृत्ति 12.24% का उच्च, 69. 38% का औसत एवं का निम्न है।

iii) जहाँ छात्रों का हिंदी के प्रति मनोवृत्ति 15.46% का उच्च, 70.10% औसत, 14.43% निम्न है। वहीं छात्राओं का हिंदी के प्रति मनोवृत्ति 14. 28% का उच्च, 69.64% का औसत, 16.07% का निम्न है।

परिणामों की व्याख्या

- **नल परिकल्पना 1** में लिंग के आधार पर अंग्रेजी माध्यम विद्यालय के विद्यार्थियों का हिंदी के प्रति मनोवृत्ति में काई सार्थक अंतर नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि छात्र एवं छात्राओं की हिंदी के प्रति मनोवृत्ति एक समान है। लिंग के आधार पर हिंदी के प्रति मनोवृत्ति पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

- **नल परिकल्पना 2** में बोर्ड के आधार पर अंग्रेजी माध्यम विद्यालय के विद्यार्थियों का हिंदी के प्रति मनोवृत्ति में सार्थक अंतर हैं। CBSE का माध्य 115.54 है तथा ICSE का माध्य 110.74 है। अतः कहा जा सकता

हैं कि ICSE बोर्ड के मुकाबले CBSE बोर्ड के छात्र/छात्राएँ हिंदी के महत्वों से अवगत हैं जिसके कारण CBSE बोर्ड के छात्रों का हिंदी के प्रति मनोवृत्ति ICSE के मुकाबले सकारात्मक हैं।

- **नल–परिकल्पना 3** में स्कूल के प्रकार के आधार पर अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यालयों में छात्र–छात्राओं का हिंदी के प्रति मनोवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि विद्यालय के प्रकार के आधार पर विद्यार्थियों का हिंदी के प्रति मनोवृत्ति पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष

अंततः हिंदी भाषा हमारे राष्ट्र की एकता, सम्मान तथा विकास का आधार है। जिस प्रकार सभी व्यक्ति अपने देश की राष्ट्रभाषा का सम्मान करते हैं, उसी प्रकार हमें भी अपनी राष्ट्रभाषा का सम्मान करना चाहिए तथा अपने आने वाली पीढ़ी को भी हिंदी भाषा के महत्व को समझना चाहिए।

सन्दर्भ सूची

- अग्रवाल, जे॰सी (2010/2011). शिक्षा के दर्शनिक समाजिक एवं आर्थिक आधार.अग्रवाल पब्लिकेशन्स. आगरा–2।
- आर्य, सुधा (2008). हिंदीशिक्षण. रजत प्रकाशन. नई–दिल्ली.।
- कौशिक. जे. एवंसफाया. आर. (1987). हिंदीशिक्षण. साहित्यएकेडमी. चंडीगढ़.।
- गुप्ता, एस॰पी॰. एवं गुप्ता, अलका (2014). उच्च्तर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन. इलाहबाद.।

- जायसवाल, एस॰ (1992). शिक्षा मनोविज्ञान. प्रकाशन केंद्र. लखनऊ.।
- पाण्डेय, आर॰ (2008). हिंदी शिक्षण. विनोदपुस्तकमन्दिर. आगरा.।
- पाठय, पी॰डी॰ (2010/2011). शिक्षा मनोविज्ञान. अग्रवाल पब्लिकेशन्स. आगरा–2.।
- पाठक, पी॰डी॰ (2013/2014). शक्षा मनोविज्ञान. अग्रवाल पब्लिकेशन्स. आगरा–2.।
- गि॰ . विनोद, (2012), कक्षा ग्यारह स्तर के अधिगृहीताओं की वैयक्तिक भिन्नताओं के सम्बन्ध में गणित विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर कम्पूटर आधारित टयूटोरियल सॉफ्टवेयर अनुदेशन के प्रभाव तथा उसके प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन. Shodhganga.inflibnet.ac.in. पेज–10.।
- के॰. बुद्धिमान, (2012), पश्चिम ओडिशा संभाग में केन्द्रीय विद्यालयों में माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति के छात्रों की संस्कृत भाषा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन. Shodhganga.inflibnet.ac.in. पीएच॰ डी॰ थीसिस, पेज–08.।
- एस॰. संजीव, (2012), राजस्थान और पंजाब बी॰ एड॰ स्तर के अध्ययन में कार्य संतुष्टि, सृजनशीलता और अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय बीकानेर. पेज–20.।

•••